

रविवार, दिनाँक 11-02-2024 को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

- साजन साजन, साजन जी - भई सुरत तुम्हारी ।
तुम हो शब्द, मैं भाषा तुम्हारी ॥
- साजन साजन, साजन जी - भई सुरत तुम्हारी ॥
भाषाबद्ध जो सार्थक शब्द हैं ।
सार्थक शब्द ही मुख से बोलूँ ॥
- साजन साजन, साजन जी - निर्मल हो जाए वाणी ॥
तुम हो शब्द, मैं भाषा तुम्हारी ।
- साजन साजन, साजन जी - भई सुरत तुम्हारी ॥
तुम ही शब्द हो तुम्ही परिभाषा ।
बल, बुद्धि और मेरा विश्वासा ॥
- साजन साजन, साजन जी - सूरजां दे सूरज तो वारी ।
तुम हो शब्द, मैं भाषा तुम्हारी ।
- साजन साजन, साजन जी - भई सुरत तुम्हारी ॥
शब्द ब्रह्म का ज्ञान-विज्ञान भी तुम हो ।
भाव-स्वभाव का निर्माण भी तुम हो ॥
- साजन साजन, साजन जी - तुम हो परउपकारी ।
तुम हो शब्द, मैं भाषा तुम्हारी ।
- साजन साजन, साजन जी - भई सुरत तुम्हारी ॥
ब्रह्म भी तुम हो, ब्रह्माण्ड भी तुम हो ।
ब्रह्म सत्ता, सर्व महान भी तुम हो ॥
- साजन साजन, साजन जी - आप हो कुदरत दे वाली ।
तुम हो शब्द, मैं भाषा तुम्हारी ।
- साजन साजन, साजन जी - भई सुरत तुम्हारी ॥
मेरे निर्माता, विधाता भी तुम हो ।
सच कह दूँ मेरे प्राण भी तुम हो ॥
- साजन साजन, साजन जी - हुण तां हो गई यारी ।
तुम हो शब्द, मैं भाषा तुम्हारी ।
- साजन साजन, साजन जी - भई सुरत तुम्हारी ॥
पाँच तत्वों का जो पुतला है इसमें ।
उस मानव की पहचान भी तुम हो ॥
- साजन साजन, साजन जी - सुरत जावे बलिहारी ।
तुम हो शब्द, मैं भाषा तुम्हारी ।
- साजन साजन, साजन जी - भई सुरत तुम्हारी ॥
सर्गुण - निर्गुण - निर्वाण भी तुम हो ।
बन्धु - सखा मेरे भगवान भी तुम हो ॥
- साजन साजन, साजन जी - तुम हो बड़े सुखकारी ।
तुम हो शब्द, मैं भाषा तुम्हारी ।
- साजन साजन, साजन जी - भई सुरत तुम्हारी ॥

सजनों अगर आपने यह शब्द ध्यानपूर्वक सुने हैं तो आपको समझ आ गया होगा कि सुरत रूपा स्त्री, आद् पुरुष शब्द संग ही शोभित हो तो अच्छी लगती है। परमार्थ का भी यही नियम है कि इस जगत में विचरते समय अपने ख्याल को निरन्तर प्रभु में लीन रखना सुनिश्चित करो। इस संदर्भ में अगर सजनों सुरत यानि हमारा ख्याल प्रभु में लीन रहता है तो जानो वह अपने घर में वास करता है और इसके सद्परिणाम स्वरूप मन में किसी भी प्रकार का फुरना उत्पन्न नहीं होता। इसके विपरीत सजनों जब सुरत अपने साजन संग रहने के स्थान पर जगत में उलझ जाती है तो मन में फुरना उत्पन्न हो जाता है। आशय यह है कि जगत 'काम' का, कामना का हेतु है और शब्द 'निष्कामता' का प्रतीक है। जानो कि निष्कामता ही निष्कलंक जीवन का आधार है और निष्कलंक ही चरित्रवान कहलाता है। इसलिए सजनों हमें खुद पर सावधान रहना है ताकि हम किसी प्रकार से भी, किसी के छलावे में आकर या फिर कुछ भी संसारी देखते हुए, उसमें उलझने की व अपने ख्याल को सच्चे घर से बेघर करने की भूल कदापि न कर बैठे। याद रखो अगर जान-समझ कर भी हमसे यह मूर्खता हो जाती है तो हमें जीवन भर पछताना पड़ सकता है। इस सन्दर्भ में मत भूलो कि एक अविचारयुक्त लिया हुआ निर्णय पूरे जीवन को उलझाकर रख रख सकता है।

ऐसा न हो इसीलिए सजनों सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ बार-बार हर सजन को चेतावनी दे रहा है कि जीवन में जो भी निश्चय लो, वह विचारसंगत लो। वर्तमान में जो भी करो वह भविष्य को दृष्टिगत रखते हुए करो कि आज अगर मैं यह कर रहा हूँ तो इससे मेरे भविष्य का स्वरूप सकारात्मक होने वाला है या नकारात्मक होने वाला है? इस सन्दर्भ में जानो कि जो भी सजन यह सावधानी लेकर अपने जीवन को आगे बढ़ाता है, उसका जीवन यकीकन सुखमय व आनन्दमय बना रहता है। अतः सजनों हमें चाहिये कि जीवन का कोई भी फैसला, चाहे छोटा हो या बड़ा, उसके हर पहलू का आंकलन कर विचारसंगत ही लेना सुनिश्चित करें। सजनों यह अपना एक नियम बना लो ताकि किसी भी कारणवश आज कोई ऐसा गलत फैसला न ले लिया जाये जो कि कल परेशानी का कारण बने। यह अपने प्रति सजनता दर्शाने की बात है। चलो अब ध्यान से भजन सुनो:-

अन्दर राहवाँ मैं बाहर न जावाँ, सदके जावाँ वारी महाराज।
सदके जावाँ बलिहार जावाँ, साँवले चरणाँ तों जावाँ वारी महाराज॥
अन्दर आवे प्रेम ते प्रीति, बाहर कामना सतावे महाराज।
कामना सतावे ते पई घबरावे, चैन न आवे दिन रात महाराज॥
अन्दर प्यार ते लाडाँ नू देखाँ, बाहर क्रोध सतावे महाराज।
क्रोध सतावे घर विच झगड़ा पवावे, वैर विरोध दिखावे महाराज॥
साँवले चरणाँ विच शान्ति आवे, बाहर लोभ सतावे महाराज।
लोभ सतावे रघुनाथ जी दा रस्ता भुलावे, भय दिखावे हरदम महाराज॥
मोह सतावे दुनियाँ विच फंसावे, घबराहट दिखावे हरदम महाराज॥
अन्दर हैन फुलाँ दियाँ माला, बाहर दुःखाँ दी माला महाराज।
दुःखाँ दियाँ माला ते भरम दिखावन, भरमदी आई तुआडे द्वारे महाराज॥
अन्दर हैन फुलाँ दियाँ सेजाँ, बाहर कंडियाँ दियाँ सेजाँ महाराज।
कंडियाँ दियाँ सेजाँ ते चोभा देवन, शरण मैं आई तुम्हारी महाराज॥
अन्दर हैन फुलाँ दियाँ वर्षा, बाहर तृष्णा दी सर्पनी महाराज।
फुकारे मारे ते ज़हर खिलारे, रक्षा करो तुसीं आप महाराज॥

अन्दर देखां सम सन्तोष, बाहर अहंकार सतावे महाराज ।
अहंकार सतावे अभिमान दिखावे, मौत खरीदी हुण आप महाराज ।।
दासी ए पुकारदी ए, हुण पंजां तों बचाओ महाराज ।
पंजां तों बचाओ पंजे मार मुकाओ, इको रूप दिखाओ महाराज ।।

सजनों इस भजन द्वारा आज के आत्म-विस्मृत मानव को अत्यन्त ही सरल शब्दों द्वारा आत्मस्मृति में लाने का प्रयास किया गया है। इस संदर्भ में सजनों जब इस संसार में यानि बैहरुनी वृत्ति के तहत परिवार में विचरते समय सच्चेपातशाह जी को अपने अन्तर्घट में नकारात्मक वातावरण के विकसित होने का एहसास हुआ तो वह इतना दुःखद रहा कि उन तमाम दुष्परिणामों को सहन करना उनके लिए नामुमकिन हो गया। तभी सजनों यह भजन आया। इस विषय में सजनों यदि आज हम खुद को देखें तो लगता है कि हमारे साथ भी यही हुआ पड़ा है और हम दुःख से उबर नहीं पा रहे। बार-बार शास्त्र को पढ़ने के बावजूद व सत्संग में आने के बावजूद भी हमें इस दुःख से उबरने का रास्ता प्राप्त नहीं हो पा रहा। ज्ञात हो कि इस परेशानी से उबरने हेतु सच्चेपातशाह जी ने सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की चरण-शरण में आना स्वीकारा और उनसे अपने दिल की हालत इस प्रकार खोल बताई कि हे महावीर जी ! बैहरुनी वृत्ति में विचरने से जो मेरे भाव-स्वभाव बने, उन भाव-स्वभावों ने मुझे इतना अधिक परेशान कर दिया कि काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार मेरे अन्तर्मन पर हावी हो चुके हैं। सजनों निश्चित रूप से भूलवश आप सबके साथ भी ऐसा ही हुआ पड़ा है। ऐसे में सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि जब हमने बैहरुनी वृत्ति छोड़कर अन्दरुनी वृत्ति को धारण किया तो हमें असीम सुखानन्द प्राप्त हुआ। इसी सुखानन्द का वर्णन उन्होंने अति सरलता से इस भजन में किया ताकि जो भी इस भजन को सुनें, उनके अन्दर भी इस शुभ परिवर्तन के प्रति उत्साह पैदा हो। जानो सजनों यह एक शुभ परिवर्तन है।

इस शुभ परिवर्तन को लाने हेतु सजनों समझो कि यह भजन हमें क्या कह रहा है? यह भजन हमें कह रहा है कि हे कलियुगी मानव, सत्य का प्रतीक सतयुगी मानव बनने हेतु समझ कि बैहरुनी वृत्ति में तो तुझे तेरा शरीर नजर आ रहा है परन्तु अन्दरुनी वृत्ति में जो आत्म-स्वरूप है वह नजर नहीं आ रहा क्योंकि उसके साथ तेरे ख्याल का नाता नहीं बन पा रहा। इस सन्दर्भ में जानो, ऐसा इसलिए हो रहा है क्योंकि ख्याल केवल नश्वर शरीरों में ही उलझा पड़ा है। उन्हीं के साथ हँस-खेल रहा है और वैसा ही सब कुछ कर रहा है। इस तरह नकारात्मक भाव-स्वभावों का आदान-प्रदान चल रहा है। इस परिप्रेक्ष्य में सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि मान लो यह शरीर नश्वरता का प्रतीक है। यह एक अवस्था में कभी भी नहीं रह सकता क्योंकि यह सम्पूर्ण जगत नश्वरता का ही प्रतीक है। अतः अपने ख्याल/सुरत को इसके साथ कदापि मत जोड़।

इस सन्दर्भ में पहले सच्चेपातशाह जी हमें बैहरुनी वृत्ति में जो हमारा स्वरूप है उसके बारे में बताते हैं और कहते हैं कि अपना जो असलियत स्वरूप है यानि आत्म-स्वरूप, उसके साथ अपने ख्याल/ध्यान को जोड़ व अपने वास्तविक रूप को पहचान। याद रख जब ख्याल उधर जायेगा तो ही हमारा ध्यान उसको पहचानने में संलग्न रहेगा। अब ध्यान क्या होता है ? - दृष्टि। चूंकि यह कुदरत का नियम है कि जिधर ख्याल उधर ही दृष्टि होती है। अतः यदि ख्याल संसार की तरफ है तो हमारा ध्यान भी

उधर ही होगा और अगर हमारा ख्याल आत्म-स्वरूप की तरफ है तो हमारा ध्यान भी उधर ही होगा। इस सन्दर्भ में जानो कि दोनो स्वरूपों में अन्तर है कैसे ? इस हेतु जानो जो शरीर रूपी स्वरूप है वह नश्वर है और नश्वरता का प्रतीक है क्योंकि यह पाँच तत्त्वों से बना हुआ है इसीलिए इसकी अपनी स्थाई हस्ती नहीं है और यह उन्हीं तत्त्वों पर निर्भर है। इसके विपरीत जो आत्म-स्वरूप है वह तो ईश्वर का दर्शन है तथा अजरता-अमरता का प्रतीक है। यदि ख्याल इन नश्वर शरीरों के साथ जा जुड़ता है तो हमारे अन्दर नश्वरता के ही भाव-स्वभाव पनपेंगे। सजनों जानो कि जो नश्वरता का भाव-स्वभाव होता है वह अच्छी-बुरी परिस्थिति अनुसार हर क्षण बदलता रहता है। परिस्थिति अनुकूल हुई तो हँसने लगता है, खुश होता है और अगर परिस्थिति प्रतिकूल हो गई तो इन्सान सोचों में पड़ा रह, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार के प्रभाववश रोता-झुखता है और अपने व सबके लिये दुःखदायी साबित होता है। इस तरह काम यह हमारी बौद्धिक शक्ति को क्षीण कर देता है। बौद्धिक शक्ति क्षीण होते ही चित्त की प्रसन्नता गई और फिर हम हर क्षण परेशान रहते हैं। सजनों मानसिक परेशानी में हम जीवन के जो महत्वपूर्ण फैसले लेते हैं, वह फैसले हम ठीक से नहीं ले पाते। कई दफा तो बहककर हम जीवन में ऐसे फैसले ले जाते हैं जिसके परिणाम में अन्ततः हमें पछताना पड़ता है। परन्तु फिर पछताने से कुछ भी नहीं बनता। तभी तो कहा गया है कि 'फिर पछताये होत क्या, जब चिड़ियाँ चुग गई खेत'। इस तरह सजनों जीवन का असली मकसद हम प्राप्त नहीं कर पाते क्योंकि हम जीवन की असलियत से सदा सर्वदा अनभिज्ञ ही रहते हैं और, असलियत को जान नहीं पाते। आशय यह है कि हमें यथार्थ रूप से जीना ही नहीं आया। यथार्थ रूप से जीना न तो किसी माँ-बाप ने, न ही किसी टीचर ने और न ही अन्य किसी और ने हमें सिखाया है। जब उनको ही नहीं आता तो वह सिखायेंगे ही क्या ? इस सन्दर्भ में जानने का प्रयास करो कि जब हम यथार्थता से हटकर जीवन यापन करेंगे तो हमारा जीवन किस दिशा में जा रहा होगा? क्या हम परमार्थ सिद्ध करने जा रहे होंगे या नरकों की ओर बढ़ रहे होंगे? यह परिणाम हम स्वयं ले सकते हैं।

सजनों सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि हम सम्भल जायें और बैहरुनी वृत्ति छोड़कर अन्दरुनी वृत्ति को धारण करें। अन्दरुनी वृत्ति में क्या है? - सम है, सन्तोष है, धैर्य है। जहाँ हमारे पास यह सम, सन्तोष और धैर्य की ताकत है तो हम सत्य-धर्म के मार्ग पर डटे रह सकते हैं। हमें कोई भी भरमा नहीं सकता क्योंकि सतयुग में सभी सतवादी होते हैं। जब सब सतवादी होते हैं तो उनकी मानसिक स्थिति हर अवस्था में एक अवस्था में बनी रहती है यानि कभी ऊपर-नीचे नहीं होती। तभी उनके मन में शान्ति का वास होता है। सजनों इसके विपरीत जब मानसिक स्थिति ऊपर-नीचे होती है तो शान्ति के स्थान पर अशान्ति फैलती है। अशान्ति में हमारी सुरत भयभीत रहती है और सोचों में डूबी रहती है कि अब क्या होगा या तब क्या होगा। तभी संकल्प-विकल्प की तरंगे उठती हैं और हम जीवन का कोई भी विचारयुक्त फैसला ले ही नहीं पाते। इस तरह अन्त में नुक्सान अपना ही होता है। ऐसा इन्सान चाहे कितना ही भौतिक पढ़ा-लिखा क्यों न हो, अपना नुक्सान खुद कर बैठता है। यह मूर्खता की बात है। परन्तु आज तो समय ऐसा है कि मूर्ख को मूर्ख कहो या उसे समझाने का प्रयास करो तो वह सुनने को ही तैयार नहीं क्योंकि अज्ञान ने उसे घेर रखा है। इस सन्दर्भ में जानो कि जब तक काम-वासना पर विजय प्राप्त नहीं कर लेते तब तक इन्सानियत अनुरूप निष्पाप जीवन जीना नामुमकिन सी बात है। इसीलिए कहा गया है कि अपने ख्याल/सुरत/मन को आत्म-स्वरूप में लीन

रखो और उसकी शोभा-सुन्दरता देख-देखकर प्रसन्न होवो तथा वैसा ही परस्पर व्यवहार करो। ऐसा करने पर ही आप सब एकता में रह सकते हो, और लड़ाई-झगड़ा करने के स्थान पर शान्ति ही शान्ति और स्वस्थता बनी रह सकती है।

सजनों अगर अभी भी यह सब कुछ सुनने के बाद आप अपने आप में परिवर्तन ले आते हो और अपने अन्दर स्वाभाविक परिवर्तन की एक आध्यात्मिक क्रान्ति छेड़ देते हो तो यकीन मानो कि आपका बिगड़ा काम बन सकता है। सो अभी आपके पास मौका है। इस मौके का लाभ उठाओ और तत्परता से परिवर्तन को स्वीकारो व आत्मीयता अनुसार निष्पाप जीवन जीना आरम्भ कर परमात्मा के सुपुत्र कहलाओ। अब ध्यान से कीर्तन सुनो:-

**यत्र तत्र राम ही राम
(महाबीर जी के मुख के शब्द)**

अखियां देख रहियां, राम दा नज़ारा अखियां देख रहियां।
चमके जगत ते सारा, अखियां देख रहियां।।
आप हो इलाही, इलाही जोत तुम्हारी, चमके जगत ते सारा।
अखियां देख रहियां, राम दा नज़ारा अखियां देख रहियां।।
तूं पिण्डे तूं है ब्रह्माण्डे, पसर रिहा जग सारा।
अखियां देख रहियां, राम दा नज़ारा अखियां देख रहियां।।
तूं पसरिया जग पसरे तेरे विच, हरि ओ३म् इक ओंकारा।
अखियां देख रहियां, राम दा नज़ारा अखियां देख रहियां।।
तूं है राम मैं हूं राम राम जगत है सारा अखियां देख रहियां।
अखियां देख रहियां, राम दा नज़ारा अखियां देख रहियां।।
तूं जगदीश है सब दा स्वामी, विन सूरजों चमकारा।
अखियां देख रहियां, राम दा नज़ारा अखियां देख रहियां।।

सजनों जो भी कीर्तन बुलता है, उसको केवल सुनना या बोलना ही नहीं होता अपितु उसके हर शब्द की गहराई को समझने की आवश्यकता होती है ताकि हम जान सकें कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ द्वारा ईश्वर हमें सृष्टि के किस सत्य से परिचित कराने जा रहे हैं। अब इस कीर्तन में भी अपनी अपार कृपा से प्रभु हमें सृष्टि के इस सत्य से परिचित कराते हैं कि हे मानव ! मान ले कि यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड राममय है। इस शरीर में भी वही राम रम रहा है, उस शरीर में भी वही रम रहा है यानि हर शरीर में वही रम रहा है। अतः इस सत्य को स्वीकारते हुए जगत को देखने और धारण करने का दृष्टिकोण वैसा ही बना ले। आशय यह है कि शरीरों में मत उलझ अपितु शरीरों से ऊपर उठ और अपने यथार्थ को यथार्थता से पहचान कर निष्पाप इस जगत में विचरते हुए ईश्वर प्रदत्त आज्ञाओं का समयबद्ध पालन कर और ईश्वर को प्रसन्न कर ले। जानो यह कर्तव्यपरायण आज्ञाकारी सुपुत्र बनने की बात है। सजनों जब तक हम इस सत्य को नहीं मानते कि इसमें भी राम है, उसमें भी राम है, हमारे हृदय में भी राम है, तब तक हमारा ख्याल शरीरों से ऊपर उठकर यथार्थ को नहीं पकड़ सकता। अतः आज के समयकाल में यह काम खुद को खुद ही करने के लिए विवश करो ताकि हमारे अन्दर

द्वि-द्वेष के स्थान पर ऐक्य भाव स्थापित हो और हम सब स्वीकार लें कि हम सब एक हैं। ऐसा होने पर सजनों किसी का क्या बुरा करोगे?

‘मौन’

निश्चित रूप से तब किसी का बुरा नहीं करोगे क्योंकि किसी का बुरा करना अपना बुरा करने के समान लगेगा। इस तरह पूरे घर-परिवार का, समाज का वातावरण ही बदल जाएगा और की हुई मेहनत सकारात्मक होगी व सबके काम आयेगी यानि सबके हित के लिए होगी। यही नहीं फिर तो आप निन्दा-चुगली, वैर-विरोध व काम-क्रोध से भी बच जाओगे। इस प्रकार अन्तर्घट में व परिवारों में शान्ति स्थापित होने के साथ-साथ कुल समाज में शान्ति स्थापित होगी।

याद रखो ऐसा करने से आज जो दुनियाँ की भयावह स्थिति देख रहे हो और आगे जो होने वाला है, वह दुःख-सन्ताप आपको सहना नहीं पड़ेगा। अतः सजनों मानो कि यही समय है अपने आप को सुधारने-सँवारने का और आने वाले समय में निश्चिन्तता से जीवन को आगे बढ़ाने का। इसलिए समझो और सम्मिल जाओ। इस हेतु हम बार-बार कह रहे हैं कि आपको आध्यात्मिक क्रान्ति लानी ही होगी और आध्यात्मिक क्रान्ति के अन्तर्गत हर मानव को, चाहे छोटा है, चाहे बड़ा है उसे आत्मज्ञान प्राप्त करना ही होगा। सजनों जानो कि उसके बगैर आपका जीवन सँवर नहीं सकता। याद रखो कि जब आत्मज्ञान यानि समरसता का ज्ञान सबके पास होगा तो टकराव की कोई भी बात शेष नहीं रहेगी और हम एकमत होकर अपने सच्चे घर की ओर आगे बढ़ पाएंगे। अतैव आध्यात्मिक क्रान्ति से न तो खुद को, न बच्चों को, न ही सगे-सम्बन्धियों को और न ही समाज को वंचित रखो अपितु सम्पूर्ण मानव जाति का इस क्रान्ति के अन्तर्गत शामिल कर अपना सुधार करने के लिए प्रेरित करने का अनथक परिश्रम करो। ज्ञात हो कि यही क्रिया सूरज कुण्ड में चल रही है और यही क्रिया जो आज प्रगति मैदान में पुस्तक मेला लगा है, वहाँ से भी चल रही है। बच्चे मेहनत कर रहे हैं और आप भी वहाँ जाकर उनका उत्साह बढ़ा सकते हो। यह मेले दोनों स्थानों पर अठारह तारीख तक चलने हैं। यदि चाहो तो उसमें हिस्सा भी ले सकते हो। याद रखो ऐसे कामों में समय लगाना सकारात्मक होता है, बाकी सभी तो मतलब के लिये होता है। अतः भूलना मत। अब ध्यान से सुनो:-

(सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी दे मुख दा)
(श्री रामचन्द्र जी श्री साजन जी को कह रहे हैं)
उडीकां रक्खियां उडीकन अखियां उडीक रहे ने सारे।
महाबीर जी पहुंचे मन्दिरां नू नाल साजन जी प्यारे।
हां हां नाल साजन जी प्यारे।।
हो हो हो हो हर्ष हर्ष हर्षाये अंजनी दे लाल जी।
अंजनी दे लाल जी, पवन कुमार जी।।
हो हो हो हो हर्ष हर्ष हर्षाये ओ पवन कुमार जी।
अंजनी दे लाल जी, पवन कुमार जी।।
पूजा पाठ बहुतेरे कीन्हें जप तप धर्म ओ सारे।
नित नेम संयम करके पहुंचे महाराज दे द्वारे।।
ओ ओ ओ पहुंचे महाराज दे द्वारे मारे चमकारे।

पहुंचे महाराज दे द्वारे मारे चमकारे।।
 दयालु है बेअन्त, बेअन्त ओ नाम कहावे।
 बेअन्त ओहदे दर्शन बेअन्त ही दर्शन ओ पावे।।
 ओ ओ ओ कैसे ओ नज़ारे मारे चमकारे।
 कैसे ओ नज़ारे मारे चमकारे।।
 सच वर्ते सच वर्त वर्तावे धर्म दा ओ मन्त्र उचारे।
 अराधना धर्म दी साधना करके पहुंचे दयालु दे द्वारे।।
 ओ ओ ओ ओ पहुंचे दयालु दे द्वारे मारे चमकारे।
 पहुंचे दयालु दे द्वारे मारे चमकारे।।
 राम रमे रम रमे रमावे राम दा ही ओ मन्त्र सिखावे।
 एक जप तप एक दी पूजा रटो राम नाम अवर न दूजा।।
 ओ ओ ओ ओ चलो मेरे प्यारे मारे चमकारे।
 चलो मेरे प्यारे मारे चमकारे।।
 आप तरे कुल सगली तारे, सोई सजन परम पद पावे।
 ओ पहुंच गये परमधाम नूं ओन्हां पा लिया अपने स्थान नूं।।
 ओ ओ ओ ओ रोशन जगत विच सारे मारे चमकारे।
 रोशन जगत विच सारे मारे चमकारे।।
 ध्वनि:-
 सर्व ढूंडां तैनुं, सर्व अपना ही निगाह आया।
 सर्व विस्तार है मेरा, सर्व ही मैं हर्षाया।।

इस कीर्तन के सन्दर्भ में सजनों ज्ञात हो कि जो जीव अपने आप को जान जाता है वह परमधाम पहुँच विश्राम को पाता है। अतः हमारे मन में भी परमधाम पहुँचने की लालसा होनी चाहिये। उसके लिये जो भी नकारात्मक भाव-स्वभाव त्यागने आवश्यक हों, उन्हें त्याग दो ताकि अफुरता से सुरत आगे परमधाम की ओर बढ़ सकें और वहाँ पहुँच कर विश्राम को पा सकें। याद रखो बाहर के तीर्थ भटकाव हैं, अतः बाहर के तीर्थों में भटकने की आवश्यकता नहीं है अपितु जो अन्दरुनी वृत्ति में परम स्थान है, वहाँ पहुँच कर विश्राम को पाओ। ऐसा करने पर ही जीवन सफल हो पाएगा। इसके लिए प्रयास करो यानि बाहर मत भटको अपितु अन्दर जुड़ो यानि अन्दर की ओर प्रस्थान करो। इसी तरह बाह्य दृष्टि के स्थान पर, अन्तर्दृष्टि प्राप्त कर यथार्थ को धारण करो और उसे ही ख्याल में उतरने दो। जानो यही सत्य है।

सजनों इसी सन्दर्भ में आज ध्यान-कक्ष में भी दृष्टि कन्चन कैसे रखनी है, उसके विषय में क्लास होगी। हकीकत में यह अन्दरुनी दृष्टि खोलने की बात है। याद रखो एक दृष्टि होगी तो ही एक दर्शन में स्थिति होगी। तभी ऐक्य भाव बनेगा और आपके लिये सारी बात समझकर अपनी विचारधारा में सकारात्मक परिवर्तन लाना सम्भव हो पाएगा। इस तरह आपके इतने सालों की मेहनत सकारा हो सकती है। सजनों यदि चाहते हो कि ऐसा ही हो तो फिर एक-एक शब्द को बड़े ध्यान से सुनना व समझना और अपने सजन आप बन जाना।

आप सभी इस उद्देश्य में कामयाब हों, इन्हीं शुभ कामनाओं सहित।